4

भाषा शिक्षण

राधा *

भाषा अभिव्यक्ति एवं विचारों को व्यक्त करने का एक सरल एवं सशक्त माध्यम है। भाषा से हम अपने विचारों को न केवल दूसरों तक पहुँचा पाते हैं बल्कि दुनिया से भी रू-ब-रू होते हैं। हमारे जीवन में भाषा का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। बच्चा भाषा सीखने की शुरुआत अपने घर-आँगन से करता है, लेकिन भाषा विकास में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। बच्चे के लिए भाषा सीखने की प्रक्रिया को कैसे रुचिकर बनाया जाए, जानने के लिए पढ़िए यह लेख....

शिक्षण की किसी भी प्रक्रिया को प्रारंभ करते हुए सबसे पहले जिस साधन (माध्यम) का प्रयोग किया जाता है वह है-भाषा। कोई भी ऐसी शिक्षण-प्रशिक्षण या ज्ञान की प्रक्रिया उपलब्ध नहीं है, जहाँ भाषा के बिना संप्रेषण संभव हो। बच्चों को सहजता से भाषा सिखाना निश्चित ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। विद्यालय में पहला कदम रखने से पहले ही बच्चे भाषा की अद्‌भुत क्षमताओं से परिचित होते हैं। बस, ज़रूरत है शिक्षक द्वारा उन अद्‌भुत क्षमताओं को पहचानने की, जिससे वे उनकी नन्हीं-नन्हीं परिकल्पनाओं, उनकी जिज्ञासाओं, उनकी कल्पनाओं की ऊँची उड़ान, स्वतंत्र और उन्मुक्त भाव से खोज करने की चाह को पूरा करने में सहायक हो सकें। यदि भाषा शिक्षण के आरंभ में शिक्षक योजनाबद्ध तरीके से शिक्षण प्रक्रिया शुरू करें तो बच्चे के लिए भाषा सीखना सहज तथा आनंददायी अनुभव बन सकता है।

भाषा की कक्षा में इन बातों को ध्यान में रखा जाए, तो भाषा सीखना बच्चे के लिए सरस बन सकता है –

1. **बच्चे के पूर्व अर्जित ज्ञान का स्वागत–** बच्चा जिस क्षेत्र और भाषा से संबंध रखता है उससे संबंधित जानकारी भी अपने साथ लाता है। विद्यालय में आने पर शिक्षक के द्वारा कुछ भी पूछे जाने पर वह अपने पूर्व अर्जित ज्ञान के आधार पर उत्तर देता है। कई-कई बार उसका उत्तर बहुत हास्यास्पद और कभी-कभी कुछ सोचने और समझने के लिए बाध्य करने वाला होता है। ऐसे में शिक्षक को उसके पूर्व अर्जित ज्ञान का

* सेक्टर-4, मकान नं.-276, चिरंजीव विहार, गाज़ियाबाद-201002

स्वागत करते हुए ध्यानपूर्वक सुनते और समझते हुए स्नेह के साथ उसे सीखने का अवसर देना होगा। ऐसा करने से बच्चे आपस में एक-दूसरे की भाषा, संस्कार, विचार और मान्यताओं से अनजाने में ही परिचित हो जाते हैं और सहजता से समझने लग जाते हैं। इस तरह सरलता से वह कितनी बातें कब सीख जाते हैं और भाषा की जो दीवार ज्ञान अर्जन में अड़चन बनी हुई थी कब गिर जाती है, पता ही नहीं चलता और भाषा सीखने की क्षमता विकसित होती जाती है।

2. **बच्चे के घर और विद्यालय में बोली जाने वाली भाषा के बीच में जुड़ाव**- बच्चा विद्यालय अपनी एक विशेष भाषा (क्षेत्रीय विशेषता) के भी साथ आता है। ऐसे में शिक्षक को उसकी भाषा और विद्यालय की भाषा (मानक भाषा) के बीच में जुड़ाव करते हुए उसे धीरे-धीरे सहजता से लेते हुए बोधगम्यता और मानकता की ओर ले जाना होता है। बच्चे जो भाषा पहले बोलना शुरू करते हैं (मातृभाषा या प्रांतीय भाषा) उसी में उनकी समझ बनती है और उसी में वे अर्थ निकालते हैं। ये अर्थ बच्चों के लिए क्या मायने रखते हैं इस को समझना होगा। इसके लिए शिक्षक को कुछ अतिरिक्त मेहनत और नयी तैयारी करनी पड़ सकती है लेकिन बच्चों को भाषा सिखाने के लिए यह एक सार्थक कदम हो सकता है। इससे शिक्षक को बच्चों को उनकी घर की बोली में स्वीकृत करते हुए उनको नयी चीज़ों को सार्थक तरीके से समझाने में मदद मिलेगी। कभी-कभी ऐसी स्थिति भी आती है कि घर की और शिक्षण की भाषा एक ही होती है परंतु भाषा पर क्षेत्रीय प्रभाव अत्यधिक होता है। ऐसे में पाठ के संदर्भ में व्यवहार और अभ्यास के नियमों का आधारभूत ज्ञान कराकर अभ्यास से मानकता तक पहुँचा जा सकता है।

3. **बच्चे की मातृभाषा को प्रोत्साहन** - मातृभाषा को महत्त्व देने से एक विशेष लाभ यह होता है कि बच्चे आपस में एक-दूसरे के क्षेत्र विशेष से परिचित होते हैं और खेल-ही-खेल में सैकड़ों शब्द सीख जाते हैं क्योंकि विद्यालय वह स्थान है जहाँ सभी क्षेत्रों के बच्चे आते हैं। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित 22 राष्ट्र भाषाएँ हैं। विद्यालय आने वाला प्रत्येक बच्चा इन 22 भाषाओं में से किसी-न-किसी एक भाषा को समझने वाला होता है। अब यदि दैनिक ज़रूरत की वस्तुओं के नामों का ही अभ्यास कराया जाए (उदाहरण के लिए-खाना, पहनावा, त्योहार) तो इन भाषाओं के कितने ही शब्द बच्चे सीख जाएँगे जो अध्ययन में सरलता का आधार तो बनेगा ही साथ ही इससे अप्रत्यक्ष रूप से अन्य भारतीय भाषाओं का विकास भी होगा। ऐसा वैज्ञानिक तौर पर माना भी जाता है कि बच्चे के पूर्ण ज्ञान, भाषिक क्षमता

और मानसिक विकास का सही प्रयोग सामान्यत: मातृभाषा में ही संभव होता है और बच्चा ज़्यादा अच्छी तरह समझ पाता है। इससे भाषिक और सांस्कृतिक दूरी को पाटने में भी मदद मिलेगी। वैसे भी अगर आप किसी से कहें कि आप दो-तीन भाषाएँ सीख लीजिए, तो सरलता से यह बिलकुल संभव नहीं होगा और अपने आप में बहुत नीरस होगा। परंतु उपरोक्त विधि को प्रयोग का आधार बनाया जाए तो यह शायद उतना कठिन नहीं होगा जितना प्रथम स्तर पर होगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि कोई भी भाषा अपनी सहयोगी भाषाओं के साथ ही विकसित होती है। बच्चे की मातृभाषा को प्रोत्साहन मिलने पर उसे अपने को प्रस्तुत करने का मौका मिलेगा। हो सकता है शुरू में वह गलत उच्चारण करे, उसको आप धीरे-धीरे सही करें। उसको अपनी टूटी-फूटी ही सही अभिव्यक्ति का पूरा मौका दें जिससे उसमें सृजन शक्ति का विकास हो सके, वह अपने को संदर्भ से केंद्रित कर सके और अपनी सृजनात्मकता को विकसित कर सके।

बच्चे की मातृभाषा और लक्ष्य भाषा के बीच सामंजस्य को ऐसे समझा जा सकता है -

बच्चे के घर की भाषा	⟶	कौन-सी होती है?	=	मातृभाषा
शिक्षण (सीखने) की भाषा	⟶	कौन-सी होती है?	=	लक्ष्य भाषा
बच्चा विद्यालय आता है	⟶	कौन-सी भाषा के साथ?	=	मातृभाषा विशेष भाषा और क्षेत्रीय भाषा के साथ

शिक्षक को चाहिए उसकी भाषा और विद्यालय (मानक) की भाषा के साथ सामंजस्य करते हुए सहजता से बोधगम्यता और मानकता की ओर बढ़े -

परिणाम	⟶	इससे बच्चे में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता बनेगी जो आगामी शिक्षण के लिए आधार स्तंभ साबित होगी।
लक्ष्य	⟶	अध्ययन के लिए भाषा का सम्यक ज्ञान
प्रयास	⟶	शिक्षक द्वारा बच्चों के समझने या मानसिक स्तर के अनुरूप अध्ययन की नीतियों का निर्धारण।

4. **बच्चे की सहज अभिव्यक्ति और शैली को महत्त्व** - कई बार शिक्षक अभिव्यक्ति की बजाय सही उच्चारण पर अधिक बल देते हैं, जिससे बच्चा बहुत भयभीत हो जाता है और जीवन भर के लिए उस अभिव्यक्ति क्षमता को तो खो ही देता है, जो उसकी अपनी थी साथ ही सहयोग के बिना अर्जित की गई अभिव्यक्ति क्षमता में अभिव्यक्त करने में कामयाब भी नहीं हो पाता है। यह बच्चे के लिए गंभीर स्थिति होती है। ऐसे में शिक्षक को

धीरे-धीरे एक-एक करके संशोधन करना होगा, अभ्यास कराना होगा।

जहाँ बच्चा अभिव्यक्ति ना कर पाए वहाँ उसे शब्दों का सहारा देकर उसकी अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करना होगा। जैसे (ष, स, क्ष, श्र) कुछ शब्दों का उच्चारण जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण फर्क होता है।

5. **व्यवहार और अभ्यास के नियमों का ज्ञान** – बच्चे को व्याकरण के नियमों के आधार पर भाषा को सही तरीके से सिखाने के प्रयास में शिक्षक को चाहिए कि वे बच्चे को व्याकरण की अवधारणा को विविध प्रकार के पाठों के संदर्भ में पहचानना और उसका उचित प्रयोग करना सिखाएँ। जैसे-पाठ्यपुस्तक रिमझिम में दिए गए कुछ अभ्यास –

काम वाले शब्द

(क) पिछले साल रिमझिम में तुमने पढ़ा था कि 'बनाना' काम वाला शब्द होता है। काम वाले शब्दों को **क्रिया** कहते हैं। इस **कविता में ढेर सारी** क्रियाएँ या काम वाले शब्द आए हैं। उन्हें छाँटो और नीचे लिखो।

....

....

....

....

(ख) तुमने जो क्रियाएँ छाँटी हैं, वर्णमाला के हिसाब से उनके आगे 1, 2, 3 आदि लिखकर उन्हें क्रम से लगाओ।

यह प्रयास बच्चों को भाषा सिखाने में अत्यंत लाभकारी हो सकते हैं। क्योंकि इन अभ्यासों को करते-करते बच्चे खेल-खेल में व्याकरण के बारीक नियमों को समझने लग जाएँगे जिससे

कौन क्या है?

- बाघ, गाय, बकरी, हाथी और हिरण जानवर हैं। नीचे लिखी हुई चीज़ें क्या हैं? खाली जगहों में लिखो।
  - अगरतला, अल्मोड़ा, रायपुर, कोच्चि, वडोदरा ....
  - जलेबी, लड्डू, मैसूरपाक, कलाकंद, पेड़ा ....
  - नर्मदा, कावेरी, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, यमुना ....
  - बरगद, नारियल, पीपल, चीड़, नीम ....
  - गेहूँ, बाजरा, चावल, रागी, मक्का ....
  - कुर्ता, साड़ी, फिरन, लहँगा, कमीज़ ....

(जातिवाचक संज्ञा की पहचान) (*रिमझिम-3* पाठ-मीरा बहन और बाघ)

समझ-समझदारी

रंग	रंगाई
साफ़	....
चढ़	....
बुन	....

(विशेषण बनाना) (रिमझिम-3 पाठ-कब आऊँ)

भाषा तथा अन्य विषयों की पढ़ाई के लिए भी भाषा पर उनकी पकड़ मज़बूत बनेगी। उदाहरण के लिए -

6. **यंत्रवत् भाषा से बचाव** - भाषा को वर्णों और कुछ हद तक अर्थ के आधार पर तो सीखा जा सकता है परंतु गहनता और पूर्णता से नहीं सीखा जा सकता क्योंकि यंत्रवत् तरीके से कई शब्दों को उस अर्थ में संप्रेषित नहीं किया जा सकता जिस अर्थ में उन्हें संप्रेषित करना होता है। यदि नियम याद कराने को वाक्य का आधार बनाएँगे तो सीखने में अत्यधिक कठिनाई होगी जिसमें भाषा को सहजता से नहीं सीखा जा सकेगा। यहाँ अनिवार्य रूप से याद रखना होगा कि व्यवहार और अभ्यास के आधारभूत नियमों के अभ्यास के बिना भाषा सीखना संभव नहीं हो पाएगा।

इस तरह भाषा सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा सहजता को आधार बनाकर बच्चे को धीरे-धीरे बेहतर दुनिया और ज्ञान से जोड़ने के लिए प्रारंभ से ही मातृभाषा और प्रांतीय भाषा में सहज ढंग से विचरण कराना होगा। यह काम उसके आत्मगौरव और आत्मविश्वास को ठेस पहुँचाए बिना आहिस्ता-आहिस्ता करना होगा। इससे एक लाभ यह भी होगा कि अपनी जड़ों से बिना जुड़े रहने के कारण मन में अपनी भाषा के प्रति किसी प्रकार की हीन भावना महसूस नहीं होगी और ऐसे बच्चे का प्रांतीय भाषा, मातृभाषा और शिक्षण की भाषा पर पर्याप्त अधिकार होगा।

❑❑❑